(1)

B.A. History Hon's, Part-I
Paper II, Unit-II, Date: 21.07.2020
Lession: भौगोलिक खोज

जब कभी भी हम किसी जगह, प्रदेश की राजनीतिक या भौतिक सीमाओं की बात करते हैं या किसी स्थलाकृति, जनसंख्या, जलवायु आदि को दर्शाने की बात करते हैं, तो हम मानचित्र अथवा नक्शे का सहारा लेते हैं। क्या आप जानते हैं कि मानचित्र की उत्पत्ति कैसे हुई, मानचित्र कितने प्रकार के हैं और इनकी क्या उपयोगिता है?

मानचित्र को अँग्रेजी में मैप (Map) और उर्दू में नक्शा कहा जाता है। "मैप" शब्द मध्यकालीन लैटिन "मापा मुंडी" से आता है, जहाँ "मापा" का मतलब नैपकिन या कपड़ा है और "मुंडी" का मतलब दुनिया है। इस प्रकार "नक्शा" दुनिया की सतह के द्विआयामी स्वरूप को दर्शाने वाला शब्द बन गया।

मैपों का अस्तित्व संभवतः 8000 साल से भी पहले का है। नक्शा बनाने की विधियों को प्राचीन ग्रीस में काफी उन्नत बनाया गया था। नक्शे के इतिहास की शुरुआत में रॉक नक्काशियों से बनाए गए ग्रीस, बेबीलोन और एशिया के प्राचीन नक्शे शुमार हैं।

17वीं से 19वीं सदी के दौरान, नक्शे और अधिक सटीक और तथ्यात्मक हो गए। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, हवाई फोटोग्राफी के व्यापक उपयोग से नक्शे बनाने की प्रक्रिया में काफी मदद मिली।

स्थलाकृतिक नक्शे: आधुनिक नक्शों में एक स्थलाकृतिक नक्शे की विशेषता बड़े पैमाने पर विस्तार एवं मात्रात्मक ऊँचाई से है। एक समोच्च रेखा बराबर ऊँचाई के स्थानों को जोड़ने के लिए एक लकीर है।

नक्शानवीसी: सपाट सतह पर पृथ्वी को दर्शाना तथा इसके अध्ययन एवं निरूपण की प्रक्रिया को नक्शानवीसी या नक्शा बनाना कहते हैं और जो व्यक्ति इस ड्राफ्ट को करता है, उसे नक्शानवीस कहा जाता है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रदेशों को मजबूत करने में मदद करने के लिए 1767 में स्थापित की।

नक्शे का प्रकार: प्रायः नक्शे अग्रलिखित प्रकार के हो सकते हैं: जलवायु नक्शे, मौसम के नक्शे, भौतिक नक्शे, राजनीतिक नक्शे, सड़क के नक्शे, विषयगत नक्शे, ऊँचाई के नक्शे और विश्व नक्शा। एक ही साइज के के विभिन्न प्रकार के नक्शों का संकलन एटलस कहलाता है।

नक्शों के उपयोग: नक्शे सभी के लिए उपयोगी हैं, चाहे वो कोई आम आदमी हो या कोई टेक्नोक्रेट। नक्शे आम तौर पर कई कार्यों के लिये इस्तेमाल किए जाते हैं जैसे विश्लेषण संचालन एवं नेवीगेशन, नियंत्रण और योजना सजावट, निवेश, अन्वेषण, परिकल्पना प्रोत्साहन एवं ऐतिहासिक संदर्भ। उत्पाद परिभाषित करना, डिजाइन, डेटा प्राप्त करना, नक्शा उत्पादन, जाँच और प्रूफिंग, अन्तिम उत्पादन आदि।

नक्शों को कैसे समझें: नक्शों को प्रभावी ढंग से प्रतीकों, निर्देशों, रेखाओं और लेजेंड आदि समझने की आवश्यकता होती है। कम्पास पढ़ना, नक्शा स्केल, अक्षांश और देशांतर, ऊँचाई की रेखाएँ, मुद्रा लेख या कुँजी, मैपस विशेष वस्तुओं को विशेष प्रतीकों से दर्शाते हैं।

नक्शा बनाने के लिए उपकरण: नक्शा बनाने के लिए उपकरण बाजार में उपलब्ध हैं जैसे कि आर्कजीआईएस/क्युजीआईएस, मापकिलकर, मौसम, मेपर उपकरण, समय, खेल-स्कोर, मुद्रा रूपांतरण, कैलकुलेटर, संख्यात्मक श्रेणियाँ, शब्दकोश अनुसंधान, नक्शे; मुवी शोटाइम, लाक्षणिक डाटा, रीयल इस्टेट और आवास, यात्रा डेटा,

पैकेज की खोज, पेटेंट नंबर, क्षेत्र कोड, प्रयोग खोज, अमेरिकी सरकार खोजआदि "परिभाषित करें" उपसर्ग वाले प्रश्न के बाद लिखे गये सूचीबद्ध शब्दों को यह परिभाषा प्रदान करेगा।
स्टाक: स्टॉक के बाद देखने के लिए प्रश्न के शब्द स्टॉक टिकर प्रतीकों के रूप में माने जाते हैं।
साइट: साइटडॉम "का विकल्प "com" के नाम वाले सभी डोमेन यूआरएल को खोजेगा,
ऑलइनटाइटल: केवल पृष्ठ के शीर्षक ही खोजे जाते हैं,
शीर्षक देना: एक वेबपेज शीर्षक में खोज में उपसर्ग लगाने "गूगल शब्द के साथ स्वीकृति
पृष्ठ प्रदर्शन विकल्प: कैश: कैश सामग्रियों में खोज के शब्दों को प्रमुखता देना।
कड़ी: उपसर्ग "लिंक" से उन वेबपेजों की सूची दिखायेगी।
संबंधित: उपसर्ग "रिलेटेड" उन वेबपेजों की सूची बनायेगा।
गूगल कैफीन: अगस्त 2009 में गूगल ने एक नई खोज प्रणाली की घोषणा की जिसे कूट नाम "कैफीन" था। 8 जून 2010 को गूगल ने कैफीन के पूरा होने की घोषणा करते हुए यह दावा किया कि अपनी अनुक्रमणिका को निरंतर अद्यतन करते रहने के कारण 50% नये परिणाम दिखे।
कोडपरिवर्तित खोज: मई 2010 में गूगल ने एसएसएल-कोडपरिवर्तित वेब खोज को जारी किया।
त्वरित खोज: एक संवर्द्धन गूगल त्वरित, जो उपयोगकर्ता द्वारा टाइप किये जाने के समय परिणाम सुझाता है, 8 सितम्बर 2010 को अमेरिका में शुरू किया गया। गूगल त्वरित हर खोज में उपयोगकर्ताओं का 2-5 सेकेंड्स समय बचाता है, हर खोज पर प्रति घंटे 11 लाख सेकेंड्स बताते हैं। पंडितों का अनुमान है कि गूगल त्वरित का स्थानीय और भुगतान वाली खोज पर एक व्यापक प्रभाव पड़ेगा।
अन्तर्राष्ट्रीय: गूगल कई भाषाओं में उपलब्ध है और इसे कई और देशों के लिए स्थानीयकृत किया गया है। भाषाएँ-

अरबी	संयुक्त राज्य अमेरिका	इटालियन	माओरी	रूस
बंगाली	फिलिपिनो	कजाख	मोलडावियन	सर्बी
बिहारी	फिनिश	किन्यारवांडा	रोमानियन	क्रोएशन
ब्रेटन	फ्रिसियन	कोरियन	मोंटेनेगरिन	सेन्टफ

डोमेन नाम: मुख्य यूआरएल google.com के अलावा, गूगल इंक प्रत्येक देशों/क्षेत्रों के 160 डोमेन नामों का स्वामित्व रखता है, जो स्थानीयकृत किये गये हैं।
खोजउत्पादन: मुख्य लेख वेबपेज खोजने के अपने उपकरण के अतिरिक्त, गूगल छवियां, यूजनेट समाचार समूह, समाचार वेबसाइटें खोज की सेवाएँ भी प्रदान करता है। 2006 में, गूगल ने 25 अरब वेब पेजों, प्रतिदिन 400 मिलियन प्रश्नों, 1.3 अरब छवियों तथा एक अरब से अधिक यूजनेट संदेशों को अनुक्रमित किया। न्यूज, गूगल सुझाव, गूगल उत्पाद खोज, गूगल नक्शे, पिकासा, यूट्यूब, गूगल अनुवाद खोज भी शामिल है।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर

B.A. History Hon's, Part: I

Paper: I, Unit-III, Date: 17.07.2020

Lession: कुषाणों की भूमिका

कुषाणों की उत्पत्ति और प्रसार का भी लम्बा इतिहास माना जाता है। चीनी अनुश्रुतियों से ज्ञात होता है कि मध्य एशिया की खानाबदोश जाति ह्यूंग-नू, वू-सुन और यू-ची पश्चिम चीन पर आक्रमण कर चीनी किसानों के जान-माल को लूट लिया करती थी। इसलिए हान वंश के सम्राट शी-हुआंग ने इन खानाबदोश जातियों से पश्चिमी चीन के रक्षार्थ तीसरी शताब्दी ई० पूर्व में विशाल चीन की दीवार का निर्माण करवाया। फलतः मध्य एशिया की खानाबदोश और पशुपालक जातियों के लिए चीन की पश्चिमी सीमा बन्द हो गयी। चीनी अनुश्रुति के अनुसार "यू-ची जाति पश्चिमी चीन की सीमा से खदेड़े जाने के बाद दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ी और शक जाति को पराजित कर और बाख्त्री ([illegible]) पर आधिपत्य कर लिया। कनिष्क कुषाण राजवंश का तीसरा और सबसे प्रभावशाली सम्राट था। वह विम-कडफिसस के बाद कुषाण जाति के दूसरे राजघराने का प्रथम शासक हुआ था। मौर्य के पतन के बाद सर्वप्रथम कुषाणों ने ही एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। हम यह कह सकते हैं कि कुषाणों ने भारत के विभिन्न भागों का राजनीतिक एकीकरण किया।

शांति स्थापना: यूनानियों, सिथियनों और पार्थियनों के आपसी संघर्ष से उत्पन्न भारत में अशांति का काल शुरू हो गया था किन्तु कुषाणों ने एक सुव्यवस्थित प्रशासन की बुनियाद पर शांति स्थापित किया।

वाणिज्य एवं व्यापार: कुषाण काल में चीन, मध्य एशिया और रोमन साम्राज्य से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। कुषाण राजाओं द्वारा तैयार करवाये गये बहुसंख्यक सोने के सिक्के तत्कालीन आर्थिक सुदृढ़ता का परिचय देते हैं। भारत में रोम से अत्यधिक सोना आता था।

महायानवाद का उद्भव और विकास: कुषाण काल में बौद्ध धर्म का एक नया रूप हमारे सम्मुख आता है। हीनयान के स्थान पर महायानवाद का विकास इसी काल में हुआ। महायानवाद का प्रसार मध्य एशिया और चीन में कुषाणों के काल में हुआ।

धार्मिक सहिष्णुता: कुषाण राजाओं ने किसी धर्मविशेष का पक्षपात नहीं किया। कनिष्क स्वयं बौद्ध था तथा वासुदेव ने शैव धर्म स्वीकार किया। परन्तु दूसरे धर्मों के प्रति उन्होंने सहिष्णुता की नीति का पालन किया। उन्होंने धार्मिक विश्वास किसी पर थोपने का प्रयत्न नहीं किया।

मूर्तिकला: भारतीय कला के इतिहास में कुषाण काल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्ध को मानव रूप में प्रस्तुत करने का रिवाज कुषाणों के समय से ही शुरू हुआ। मूर्तिकला की दो शैलियों का विकास क्रमशः गान्धार और मथुरा केन्द्रों में हुआ।

गंधार शैली: स्वात घाटी से प्राप्त विशिष्ट पत्थर का प्रयोग, बुद्ध की खड़ी मूर्तियों में कमलासन, सिर के बाल घुंघराले या लहरियादार हैं जिनका समापन बीच में एक गांठ के रूप में हुआ। गंधार के शिल्पियों ने बुद्ध को अपोलो देवता के समान प्रस्तुत करने का प्रयास किया। बुद्ध के जीवन सम्बन्धी दृश्यों के उत्कीर्ण में मानवीय भावों को प्रधानता दी गई है। तपस्या करते हुए बुद्ध की उपवास ग्रस्त कंकाल मूर्ति न केवल शारीरिक शास्त्र की सजीव प्रतिमूर्तियाँ हैं। दृष्टि से रचनात्मक है बल्कि तपस्या के आदर्श को भी चरितार्थ करती है। गंधार शैली का काल पहली शती और चौथी शती ई० के बीच निश्चित किया जाता है।

मथुरा शैली: मथुरा के शिल्पियों ने भी अपना विषय बुद्ध और उनके जीवन की घटनाओं से ही लिया। सफेद चित्तीदार लाल पत्थर का प्रयोग, विशालता, मुण्डित मस्तक,

पर ऊर्जी कपड़े को दिखलाने के लिए गहरा निशान आदि। इन मूर्तियों के दाहिने कन्धे पर प्रायः वस्त्र नहीं दिखाया जाता था। बुद्ध मूर्तियों का निर्माण पद्मासन पर नहीं बल्कि सिंहासन पर होता था। मूर्ति का प्रभामण्डल सादा रहता था। विद्वानों का कहना है कि मथुरा कला पर गंधार का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। डा. कोगेल के अनुसार मथुरा की कला में भाव की कल्पना अथवा अलंकरण प्रकार सर्वथा भारतीय है। इसमें संदेह नहीं था कि मथुरा के शिल्पियों को गंधार शैली का ज्ञान था, उससे उन्होंने प्रेरणा भी ली होगी किन्तु मथुरा में बौद्ध मूर्तियाँ स्वतंत्र रूप से बनीं। मथुरा के बोधिसत्व की तुलना पारखम यक्ष से की जा सकती है। इस तरह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि कुषाण काल में जहाँ एक तरफ भारतीय परम्परा को अधिक अपनाया गया तो दूसरे केन्द्र पर पश्चिमी शैली की प्रधानता थी।

वास्तु कला: कुषाण राजा महान निर्माता भी थे। कनिष्क के दरबार में यूनानी इन्जीनियर अजेसिलांस की उपस्थिति इस बात की पुष्टि करती है कि कुषाणों को वास्तुकला की उन्नति में रुचि थी। इन राजाओं ने सिर सुख, कनिष्कपुरी, हुष्कपुर आदि नगरों का निर्माण किया।

साहित्य: कुषाण राजाओं के काल में संस्कृत साहित्य का पुनरुत्थान हुआ। महायान धर्म के प्रचारार्थ इसी भाषा को चुना गया। कुषाण दरबार में अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक, मंथर आदि विद्वान एवं दार्शनिकों को आश्रय मिला।

सिक्के: कुषाण राजाओं ने सोने और चाँदी के सिक्कों का प्रचलन किया। कुषाण सिक्कों का एक रोचक लक्षण है पृष्ठ भाग पर यूनानी रोमन, ईरानी और भारतीय देवी-देवताओं की अपनी विविधता है उन प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कुषाणों के राजनीतिक प्रभावान्तर्गत आ गये थे। इन सिक्कों का तौल रोमन पद्धति पर आधारित था। जिससे स्पष्ट होता है कि सोने के सिक्कों का प्रयोग अन्तराष्ट्रीय व्यापार में होता होगा।

शक-सम्वत: कनिष्क ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में शक-सम्वत अथवा कनिष्क सम्वत् की स्थापना 78 ई० में की।

सामाजिक व्यवस्था: कुषाणों का आधिपत्य और शासनकाल सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल में विदेशी जातियों को भारतीय धर्म और समाज में अंगीकार किये जाने के कारण भारतीय वर्णव्यवस्था में ही नहीं जाति-प्रथा में भी छूट और ढील दिया जाने लगा। रूसी इतिहासकारों के अनुसार "यूनानी बाहलीक और मध्य एशियाई खानाबदोश जातियों का कुषाण साम्राज्य में संगम ईरान से लेकर भारत तक एक मिश्रित समाज की स्थापना हुयी जिसमें भिन्न-भिन्न नस्ल और इलाकाई संस्कृति एक दूसरे से घुल-मिल जाने के कारण सबों दुनिया में एक नयी सांस्कृतिक विकास को जन्म दिया।"

हम यह कह सकते हैं कि निष्कर्ष रूप में कुषाणकालीन शासनकाल में भारतीय राजनीतिक ही नहीं, सामाजिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास-विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर

B.A. History Hon's, Part-I
Paper: II, Unit-I, Date: 18.07.2020
Lesson: पुनर्जागरण

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना"। 14वीं और 17वीं के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति, आंदोलन तथा युद्ध हु[ए] उसे पुनर्जागरण कहा जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चेतना आई। यह आन्दोलन केवल पुराने ज्ञान के उद्धार तक ही सीमित [नहीं] था, बल्कि इस युग में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में नवीन प्रयोग हुए। नए अनुसंधान हुए और ज्ञान-प्राप्ति के नए-नए तरीके निकाले गए। इसने परलोकवाद और धर्मवाद के स्थान पर मानववाद प्रतिष्ठित किया।

पुनर्जागरण वह आन्दोलन था जिसके द्वारा पश्चिम के [लोग] मध्ययुग से निकलकर आधुनिक युग के विचार और जीवन-शैली अ[पनाने] लगे। यूरोप के निवासियों ने भौगोलिक व्यापारिक सामाजिक तथा आध्या[त्मिक] क्षेत्रों में प्रगति की, इस युग में लोगों ने मध्यकालीन संकीर्णता छोड़कर स्व[यं] को नयी खोजों, नवीनतम विचारों तथा सामाजिक सांस्कृतिक एवं बौद्धिक उन्नति [से] सुसज्जित किया। साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, समाज और राजनीति पर से धर्म का प्रभाव समाप्त हो गया। पुनर्जागरण उस बौद्धिक आ[न्दोलन] को रोम और यूनान की प्राचीन सभ्यता-संस्कृति का पुनरुद्धार कर नयी चेतना [को] जन्म दिया।

कुस्तुनतुनिया का पतन: 1453 ई॰ में उस्मानी तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर अधि[कार] कर लिया। कुस्तुनतुनिया ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र था। तुर्कों की विजय के बाद कु[स्तु]नतुनिया के विद्वान भागकर यूरोप के देशों में शरण लिए। प्राचीन ज्ञान के प्रति [श्रद्धा] के साथ-साथ नवीन जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यही जिज्ञासा पुनर्जागरण की आत्मा थी। कुस्तुनतुनिया के पतन का एक और महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ। यूरोप और पूर्वी दे[शों] के बीच व्यापार का स्थल मार्ग बंद हो गया। इसी क्रम में कोलंबस, वास्को डि[गामा] और मैगलन ने अनेक देशों का पता लगाया।

प्राचीन साहित्य की खोज: तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दी में विद्वानों ने प्राची[न] साहित्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। इनमें पेट्रार्क, दाँते और बेकन उल्लेखनीय है। पेट्रार्क की लेखनी के चलते ही उन्हें मानवतावाद का पिता कहा गया।

मानववादी विचारधारा का प्रभाव: यूरोप की मध्यकालीन सभ्यता कृत्रिमता और कोरे आदर्श पर आधारित थी, सांसारिक जीवन को मिथ्या बतलाया जाता था। यूरो[प] के विश्वविद्यालयों में यूनानी दर्शन का अध्ययन-अध्यापन होता था।

धर्मयुद्ध का प्रभाव: लगभग दो सौ वर्षों तक पूरब और पश्चिम के बीच धर्म[युद्ध] चला। धर्मयुद्ध के योद्धा पूर्वी सभ्यता से प्रभावित हुए। आगे चलकर इन्हीं योद्धाओं ने यूरोप में पुनर्जागरण की नींव मजबूत की। सामंतवाद का ह्रा[स]: सामंती प्रथा के कारण किसानों, व्यापारियों, दस्तकारों और साधारण ज[नता] को स्वतंत्र चिन्तन का अवसर नहीं मिलता था। व्यापार के विकास ने एक नए व्यापारी वर्ग को जन्म दिया।

पूरब से सम्पर्क: जिस समय यूरोप के निवासी बौद्धिक दृष्टि से पिछड़े हुए [थे,] अरब वाले एक नयी सभ्यता-संस्कृति को जन्म दे चुके थे। अरबों का साम्राज्य स्पेन और उत्तरी अफ्रीका तक फैला हुआ था।